शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मालवी काव्य साहित्य में ग्रामीण जीवन

डॉ. प्रतिभा सोलंकी,
प्राध्यापक (हिन्दी)
माता जीजा बाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय
इन्दौर. मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत के हृदय अंचल मालवा की धरती अत्यंत उपजाऊ और धनधान्य से परिपूर्ण रही है। यहां बोली जाने वाली मालवी भाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। मालवा का अधिकांश क्षेत्र ग्रामीण अंचल हैं जो प्राकृतिक संपदाओं का धनी है। इसके बारे में कही गई पंक्तियाँ 'देस मालवा गहन गंभीर। डग-डग रोटी पग पग नीर' मालवा की समृद्धि की द्योतक है। प्रस्तुत शोध पत्र में मालवी काव्य में ग्रामीण जीवन के विविध रूप का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना

मालवा भारत का हृदय देश है, हृदय के समान ही वह बाह्म आघातों से सुरक्षित है । मध्यवर्ती और सुरक्षित होने से मालवा बहुधा शांत रहा। वर्षा, सर्दी, गर्मी मध्यम कोटि की होने से जनता सुखी, भूमि उपजाऊ होने से आर्थिक निश्चिंतता । न बड़े पहाड़, न बडी नदियां, न नदियों की प्रलयंकारी बाढ। छहों ऋतुए संतुलित रहने से जनजीवन और जनप्रकृति मधुर और सरस।1 मालवा क्षेत्र की इसी विशेषता पर संत कवि सुंदरदासजी ने लिखा है:-

वृच्छ अनंत सुनी रवहंत , सुसुंदर संत बिराजे तहींते/ नित्य सुकालपड़े न दुकाल, सुमालव देस भलो सबहींतें ।

ऐसी धरती का ग्रामीण परिवेश और मानव जीवन समृद्धिशाली रहा जिसे मालवी कविताओं में विविध रूपों में चित्रित किया गया है । मालवा की काली मिट्टी की गंध यहाँ के कवियों में अनुभूत की जा सकती है । खेतों का सहज सौंदर्य खिलते पलाश, गन्ने की चरखी से उठती भीनी महक , आंगन, चोपाल, पनघट, तीज-त्यौहार एवं लोकजीवन के विविध रंग ये सभी कवियों को आकर्षित करते रहे हैं और इनके चटख रंग कविताओं के रूप में उभरेहैं ।

मालवा के कवि और उनका काव्य

मालवी के प्राचीन संत कवियों यथा पीपा, लालदास, जग्गाजी, चंद्रसखी, गरीबदास आदि ने भक्ति संबंधी कवितायें लिखी किंतु उनमें प्रतीक ग्रामीण जीवन से लिए। ये सभी ग्राम्य परिवेश से अंतरंगता से जुडे थे। ये सभी सामाजिक, सांस्कृतिक, समरसता पर बल देने के साथ ही धार्मिक आडंबर, पाखंड का विरोध करते थे। आधुनिक मालवी काव्य धारा के प्रारंभिक कवियों में हरीश निगम, पन्नालाल शर्मा, नायाब, युगलकिशोर द्विवेदी, आनंदराव दुबे आदि कवियों का नाम आता है। आनंदराव दुबे ने मालवी मुहावरों, ग्रामीण जीवन के विभिन्न रंगों, ऋतुओं और फसलों तथा मनोवैज्ञानिक तथ्यों का बडी सहजता एवं प्रहवमानता के साथ अपनी कविताओं में कुछ ऐसा प्रयोग किया कि मालवा के जन उनकी कविताओं के कई कतरों को कहावतों के रूप

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में प्रयुक्त करने लगे है । 'रामाजी रईग्या ने रेल जाती री , में ग्रामीण जनजीवन का सुंदर चित्र उपस्थित किया गया है । म्हारो मालवो पाक्यो में मालवा की जीवंत संस्कृति का चित्रण किया है:-

मालवो पाक्यो रे , म्हारो मालवो पाक्यो / सांची रे सांवलियो जाणे झोंपडी झांक्यो / म्हारो मालवो पाक्यो। 2

हरीश निगम ने भी सिपरा किनारे म्हारो गांव है , कविता में ग्रामीण जीवन की झांकी प्रस्तुत की है:-

पगपग पे पाणी, डग-डग पे रोटी/ गेर गंभीरो म्हारो मालवो। / ठंडी-ठंडी रातडली मीठी मीठी बातडली झुकी झुकी निंबुवा की डाल वा। / धरर धरर घटु लोचले / धमड़ धमड़ छाछबिले / ठंडी ठंडी पीपल की छांव है। / सिपरा किनारे म्हारो गांव है। 3

इन पंक्तियों में मालवा के प्राकृतिक परिवेश के साथ ही उसकी सुख समृद्धि को भी व्यक्त किया गया है । इस धरती का किसान हमारा अन्नदाता है जो तपती धूप में, मेहनत कर अन्न उपजाता हैं। मोहनसोनी, 'किरसाण से' कविता में उस के सुख की कामना करतेहैं।4 इस सुख समृद्धि से युक्त धरती को भी मालव ने छेड़छाड़ कर सूखा और बंजर बना दिया । वनों को नष्ट कर दिया गया और नदियां सूखती चली गई । अन्नदाता किसान की स्थिति भी कष्टप्रद हो गई । आज की कविता में इन सभी बातों का चित्रण भी हुआ है:-

धरती माता रोवे / धरती पुत्र भूखो सोवे / ऊ करजा में जनमें है/ ने करजा मेंज मरें है. ।5

मालवा की धरती, खेत खलिहान, किसानों की स्थिति के साथ ही मालवी कविताओं में ग्रामीण रीति-रिवाज, परंपराओं, लोक पर्वों आदि का भी चित्रण हुआ है। भावसारबा, बालकवि बैरागी, नरहरि पटेल, मदन मोहन व्यास आदि ने जीवन के विविध पक्षों को चित्रित किया है । मदन मोहन व्यास ने गांव की होली, राखी, वसंत के रोचक वर्णन किए है।

होली आई रे फाग रचाओ रसिया / मेहनत से जो आवे पीसानो/ ऊं गंगाजल है न्हाओ रसिया 6

इस प्रकार के वर्णन सभी कवियों में मिलते हैं । अधिकांश कवियों ने ग्रामीण समाज का सूक्ष्म विश्लेषण कर हास्य -व्यंग्य के माध्यम सेग्रामीण जीवन की विसंगतियों को भी उभारने का प्रयास किया है। अधिकांश कवि लोकजवीन के चितेरे है। शहरी चकाचौंध की अपेक्षा ग्रामीण जीवन के बाह्य और आंतरिक दोनों ही पक्षों को उभारने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष

आधुनिकता की चकाचौंध से मालवा की ग्रामीण संस्कृति का क्षरण हो रहा है । लोगों का शहरों की ओर पलायन होने लगा है । भूमंडलीकरण के प्रभाव से मालवा की जलवायु में भी परिवर्तन होने लगा है। आज के मालवी काव्य में इन सभी परिस्थितियों का चित्रण अत्यंत आवश्यक है ताकि ग्रामीण समाज में जागरूकता का प्रसार हो एवं मालवा का ग्रामीण अंचल सतत विकास के पथ पर अग्रसर हो।

संदर्भ ग्रंथ

1. *मालवी भाषा और साहित्य पृष्ठ 8*
2. *मालवी साहित्य भाषा का इतिहास, श्याम सुंदर निगम, पृष्ठ 103*
3. *मालवी साहित्य भाषा का इतिहास, श्याम सुंदर निगम, पृष्ठ 103*
4. *मालवी भाषा और साहित्य, पृष्ठ 40*
5. *करसाणरो दुख, संजय जोशी, 'सजग'*
6. *हिंदी नाटक , निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएं एवं मालवी भाषा साहित्य, पृष्ठ 323*